

Shri Mallinath Chalisa

॥श्री मल्लिनाथ चालीसा॥

मोहमल्ल मद-मर्दन करते, मन्मथ दुर्द्धर का मद हरते ॥
धैर्य खड्ग से कर्म निवारे, बालयति को नमन हमारे ॥

बिहार प्रान्त ने मिथिला नगरी, राज्य करें कुम्भ काश्यप गोत्री ॥
प्रभावती महारानी उनकी, वर्षा होती थी रत्नों की ॥

अपराजित विमान को तजकर, जननी उदर वसे प्रभु आकर ॥
मंगसिर शुक्ल एकादशी शुभ दिन, जन्मे तीन ज्ञान युन श्री जिन ॥

पूनम चन्द्र समान हों शोभित, इन्द्र न्हवन करते हो मोहित ॥
ताण्डव नृत्य करें खुश होकर, निररवें प्रभुकौ विस्मित होकर ॥

बढे प्यार से मल्लि कुमार, तन की शोभा हुई अपार ॥
पचपन सहस आयु प्रभुवर की, पच्चीस धनु अवगाहन वपु की ॥

देख पुत्र की योग्य अवस्था, पिता व्याह को को व्यवस्था ॥
मिथिलापुरी को खूब सजाया, कन्या पक्ष सुन कर हर्षाया ॥

निज मन में करते प्रभु मन्थन, है विवाह एक मीठा बन्धन ॥
विषय भोग रुपी ये कर्दम, आत्मज्ञान को करदे दुर्गम ॥

नही आसक्त हुए विषयन में, हुए विरक्त गए प्रभु वन में ॥
मंगसिर शुक्ल एकादशी पावन, स्वामी दीक्षा करते धारण ॥

दो दिन का धरा उपवास, वन में ही फिर किया निवास ॥
तीसरे दिन प्रभु करे विहार, नन्दिषेण नृप वे आहार ॥

पात्रदान से हर्षित होकर, अचरज पाँच करें सुर आकर ॥
मल्लिनाथ जी लौटे वन ने, लीन हुए आतम चिन्तन में ॥

आत्मशुद्धि का प्रबल प्रमाण, अल्प समय में उपजा ज्ञान ॥
केवलज्ञानी हुए छः दिन में, घण्टे बजने लगे स्वर्ग में ॥

समोशरण की रचना साजे, अन्तरिक्ष में प्रभु बिराजे ॥
विशाक्ष आदि अट्टाइस गणधर, चालीस सहस्र थे ज्ञानी मुनिवर ॥

पथिकों को सत्पथ दिखलाया, शिवपुर का सन्मार्ग बताया ॥
औषधि-शास्त्र- अभय- आहार, दान बताए चार प्रकार ॥

पंच समिति और लब्धि पाँच, पाँचों पैताले हैं साँच ॥
षट् लेश्या जीव षट्काय, षट् द्रव्य कहते समझाय ॥

सात त्व का वर्णन करते, सात नरक सुन भविमन डरते ॥
सातों नय को मन में धारें, उत्तम जन सन्देह निवारें ॥

दीर्घ काल तक दिए उपदेश, वाणी में कटुता नहीं लेश ॥
आयु रहने पर एक मान, शिखर सम्मेल पे करते वास ॥

योग निरोध का करते पालन, प्रतिमा योग करें प्रभु धारण ॥
कर्म नष्ट कीने जिनराई, तनक्षण मुक्ति- रमा परणाई ॥

फाल्गुन शुक्ल पंचमी न्यारी, सिद्ध हुए जिनवर अविकारी ॥
मोक्ष कल्याणक सुर- नर करते, संवल कूट की पूजा करते ॥

चिन्ह 'कलश' था मल्लिनाथ का, जीन महापावन था उनका ॥
नरपुंगव थे वे जिनश्रेष्ठ, स्त्री कहे जो सत्य न लेश ॥

कोटि उपाय करो तुम सोच, स्वीभव से हो नहीं मोक्ष ॥
महाबली थे वे शुरवीर, आत्म शत्रु जीते धर- धीर ॥

अनुकम्पा से प्रभु मल्लि हैं, अल्पायु हो भवर वल्लि की ॥
अरज यही है बस हम सब की, दृष्टि रहे सब पर करुणा की ज

InstaAstr®